वर्ष - 8 नवंबर, 2021 बसंत पञ्चमी, सं. 2077 वि. ISSN 2349-1426

अंक - 11

तत्त्व-सिन्धु

UGC Care-listed
Published Quarterly in English and Hindi Language
Peer-reviewed and Inter-disciplinary
Impact Factor 7.44

कुमारस्वामी फाउण्डेशन

लखनऊ

वर्ष – 8 अंक – 11 नवंबर, 2021 बसंत पञ्चमी, सं. 2077 वि.

ISSN 2349–1426

तत्त्व-सिन्धु

कुमारस्वामी फाउण्डेशन का वार्षिक प्रकाशन

कुमारस्वामी फाउण्डेशन

लखनऊ

2021

तत्त्व-सिन्धु

कुमारस्वामी फाउण्डेशन का वार्षिक प्रकाशन

ISSN 2349-1426

वर्ष – 8 अंक – 11

नवंबर, 2021

सम्पादक

राकेश मिश्र

सह – सम्पादक

ए. पी. तिवारी

बृजेन्द्र पाण्डेय

निलय तिवारी

मुद्रक

माहेश्वरी प्रिन्टर्स

2189/214, मोतीनगर, लखनऊ–226004

मूल्य : 100 रूपये

समवेत लेखकों के विचारों का श्तत्त्व–सिन्धुश आदर करता है,

किन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह उनसे सहमत ही हो।

प्रकाशक

राकेश मिश्र

अध्यक्ष, कुमारस्वामी फाउण्डेशन, लखनऊ

सम्पर्क

बृजेन्द्र पाण्डेय, सचिव, कुमारस्वामी फाउण्डेशन, लखनऊ

ई–1, रामकृष्णपुरम, कल्याणपुर (पश्चिम), पो. विकासनगर, लखनऊ–226004

ई – मेल : brijendra_pandey18@gmail.com

Tattva-Sindhu: A Refereed/Peer-reviewed UGC Care-listed Multilingual Interdisciplinary Journal

वर्ष – 8 अंक – 11 नवंबर, 2021 बसंत पञ्चमी, सं. 2077 वि.

प्राक्कथन

'तत्व–सिंधु' का यह अंक एक लघु संस्कृति कोष है। विद्वान लेखकों ने संस्कृति–सिंधु से एक निर्मल धारा बहाकर सुधी पाठकों के लिए दर्शन, मंजन और अवगाहन सुगम कर दिया है। प्रथम आलेख में एक संत–प्रवर ने पूर्ण चंद्र की सोलह कलाओं की भांति भारतीय संस्कृति के सोलह अंगों का प्रतिपादन कर उसके पूर्णत्व को उदभाषित किया है। परवर्ती लेखों में भारत की इतिहास–दृष्टि, कला–दृष्टि, शिक्षा एवं मनोविज्ञान की अवधारणा का गंभीर निर्वचन है। सनातन हिंदू धर्म के दो सनातन महाकाव्यों– 'रामायण' एवं 'महाभारत' में 'सत्य' और 'धर्म' के अंतर्संबंध और अंतर्प्रविष्टि का तलस्पर्शी विवेचन कितने ही दवंद्वों एवं दुर्वान्दों का निरसन करता है। ऐसे धर्म–प्राण संस्कृति में 'सेक्युलरवाद' का स्तुतिगान कितना आत्मघाती होगा, ठीक वैसे ही जैसे 'आधुनिकता' में रचे–बसे हमारे विश्वविद्यालयों में 'गांधी–दर्शन' का पठन–पाठन आत्म–प्रवंचना से अधिक कुछ न होगा। गांधी का समाज–बोध, स्वराज–बोध क्या था और वह प्रचलित तथा स्थापित मान्यताओं से कितना भिन्न था, इसका संकेत भी विद्वान लेखकों ने किया है। सनातन–धर्म की आचार्य–परंपरा की संक्षिप्त रूपरेखा और आधुनिक काल के तीन परंपरानिष्ठ चिंतकों के ग्रंथों का विस्तृत परिचय भारत के सांस्कृतिक–सौरभ का रसपान कराने में सहायक है।

कल्पायुषां स्थानजयातपूणर्भवात, क्षणायुषां भारतभूजयो वरम।
क्षणेन मर्त्येण कृतं मनस्विनः, संन्यस्य संयानत्यभयं पदम् हरेः।।

(भगवतगीता, 5.19.23)

– राकेश मिश्र

प्रेरणा

बीसवीं शताब्दी में आधुनिकता की वेगवान आँधी के बीच सनातन–विद्या तथा शाश्वत परंपरा के दीपक को जलाए रखने के लिए जिन विचारकों ने अपना समस्त जीवन अर्पित कर दिया उनमें आनंद कुमारस्वामी (1877–1947) का महत्व अप्रतिम है। परंपरागत सभ्यताओं के तत्वशास्त्रीय, सौंदर्यशास्त्र एवं नीतिशास्त्रीय पक्षों के संबंध में कुमारस्वामी का ज्ञान विलक्षण और विस्मयकारी था। वे अद्‌भुत मेधा एवं अंतदृष्टि से संपन्न थे तथा परंपरागत आदर्शों और सिद्धांतों के प्रति उनकी आस्था अधिक थी। आधुनिकता की अन्तर्विसंगतियों को समझने में वे अद्वितीय हैं, इसलिए जब 'पुनर्जागरण–काल' में साम्राज्यवाद के तत्वधान में उपजे आधुनिकता के ज्वार ने बड़े–बड़े शिलाखंडों को निमग्न कर दिया, तब भी कुमारस्वामी एक वटवृक्ष की भांति अविचल खड़े रहे। कुमारस्वामी के विचारों से प्रभावित लखनऊ समाजशास्त्रीय पीठ के ख्यातिलब्ध विद्वान प्रोफेसर ए. के. सरन (1922–2003) की प्रेरणा से लखनऊ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कुछ शिक्षकों और विद्यार्थियों ने कुमारस्वामी फाउंडेशन की स्थापना की, जिसके अंतर्गत कुमारस्वामी और सरन समर्थित परंपरागत विश्वदृष्टि के आलोक में एक अध्ययन–मंडल वैचारिक और क्रियात्मक रूप से सक्रिय है।

मानव–जीवन बहुआयामी है, उसके विभिन्न सोपान है, विविध लक्ष्य हैं। उनमें अंतर्क्रिया एवं अंतर्संबंध विद्यमान है। किंतु जिस प्रकार छोटी–बड़ी समस्त जलधाराएं सिंधु में विलीन होती है, उसी प्रकार मानव–जीवन के समस्त आयाम, समस्त–लक्ष्य, समस्त सोपान एवं समस्त अंतर्संबंध एक विराट में अपनी पूर्णता प्राप्त करते हैं। समस्त दृश्य–प्रपंच एक महाज्योति का प्रतिबिंब है; उसी से उत्सर्जित एवं उसी में विसर्जित है। यही उस परंपरा का मूल लक्षण है जो काल एवं कालातीत, लोक एवं लोकोत्तर तथा मानव एवं मानवोत्तर के मध्य सेतु है। इसीलिए वह सार्वभौम भी है और विशिष्ट भी है। कालातीत, लोकोत्तर एवं मानवोत्तर होने के कारण वे सार्वभौमिक है तथा देशकाल के अनुरूप कलेवर धारण करने के कारण वह विशिष्ट है। इस मूल सत्य के विस्मरण का नाम ही आधुनिकता है; जो मूल के बिना वृक्ष की, समष्टि के बिना व्यष्टि की परिकल्पना करती है; और उसे पर्याप्त मानकर जीवन व जगत के प्रश्नों का समाधान खोजती है। इस लौह–पिंजरमय आधुनिकता के चंगुल से बच पाना असाध्य नहीं हो दु:साध्य अवश्य है। जिन्हें दैवयोग से परंपरागत चिंतन के कुछ अमृत–कण प्राप्त हो जाए उनके ऊपर आधुनिकता के तमस का अधिक वश नहीं चलता। आधुनिकता के इस तमस को समझने व इससे बच निकलने की आत्मिक–नैतिक–बौद्धिक सामर्थ्य प्रदान करने वाली अनेक विभूतियां गत शताब्दियों में हुई है। तत्व–सिंधु उन्हीं की अंगुली पकड़ जीवन व जगत की सनातन दृष्टि के किसी पक्ष या आयाम को अलौकित करने वाली कुछ प्रकाश–रश्मियों की प्राप्ति का एक विनम्र प्रयास है।

वर्ष – 8 अंक – 11 नवंबर, 2021 बसंत पञ्चमी, सं. 2077 वि.

तत्त्व-सिन्धु

कुमारस्वामी फाउण्डेशन का वार्षिक प्रकाशन
ISSN 2349-1426

प्राक्कथन

प्रेरणा

प्रतिभाग

❖ भूजल के विभिन्न आयामों एवं कृषि क्षेत्रफल में सहसम्बन्ध का स्तर (फतेहपुर तहसील के विशेष सन्दर्भ में) / डॉ. राजेन्द्र कुमार यादव – 1

❖ जयपुर जिले की चौमूं तहसील में कृषि का आधुनिकीकरण एवं सामाजिक विकास / डॉ. प्रकाश चन्द बाजिया – 10

❖ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में चित्रित राष्ट्रीय भावना / लक्ष्मी देवी – 22

❖ भरतपुर जिले में जनसंख्या की सामाजिक संरचना / शिखा सिंह – 31

❖ An Analysis of relation between Psychology and Modern Novel / Ajay Kumar – 38

❖ Perception And Customer Loyalty Of Major Pharmaceutical Companies' OTC Brand Medicine / Shruti Bhardwaj, Dr. Jyoti Rajput – 43

A Study Of Heat Transfer In The Flow Of A Second-Order Fluid Through A Channel With Porous Walls Under A Transverse Magnetic Field / Pooja Goel, Dr. Manoj Srivastava – 56

❖ A Study On Religion And Philosophy In Ancient India / Kishor Shivalal Patil, Dr. Bhamare Nanaji Daga – 64